SAMQUEST-Journal of Emerging Innovations
E-ISSN 3108-1207
Vol.1,Issue 2,pp.225-229 , July- Dec 25
Available online at : https://www.samglobaluniversity.ac.in/archives/

Review

औपन्यासिक कृति कादंबरी- डॉ. त्रिपाठी के साहित्यिक चिंतन का प्रतिचित्रण

(शोधार्थी) अनिल सोनी "डॉवर"
Corresponding E-mail: researchcoordinator@samglobaluniversity.ac.in

Received: 10/August /2025; **Accepted**:15/August /2025 ;**Published**:7/Feb/2026.

शोध आलेख

कृति	: कादंबरी (बाणभट्ट कृत संस्कृत कथा का हिन्दी रूपांतर)
रूपान्तरकार	: डॉ. राधा बल्लभ त्रिपाठी
विधा	: उपन्यास
विषय	**: औपन्यासिक कृति कादंबरी- डॉ. त्रिपाठी के साहित्यिक चिंतन का प्रतिचित्रण**

शोध सार :

उपन्यास कादंबरी हिन्दी के ख्यातिलब्ध साहित्यकार एवं संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान डॉ. राधा बल्लभ त्रिपाठी द्वारा सातवी शताब्दी के संस्कृत के प्रसिद्ध गद्यकार बाणभट्ट कृत संस्कृत कथा कादंबरी का हिन्दी में औपन्यासिक रूपान्तर है जो भारतीय इतिहास को परत दर परत हमारे सम्मुख अनावृत्त कर हमें हमारे अतीत के वैभव एवं सौन्दर्य से परिचित कराने का उपक्रम है।

पुस्तक कलेवर :-

पुस्तक का कलेवर इतना मनभावन और मोहक है कि देखकर प्रतीत होता है कि मानो डॉ. त्रिपाठी के साहित्यिक ज्ञान की आभा इस पुस्तक के आवरण को दैदीप्यमान कर रही है। आवरण पर हल्के स्फटिक जल रंगो से मुद्रित सुमन पुञ्ज देख कर स्वतः मानस एक आलौकिक शान्ति अनुभूत करता है। वहीं "कादंबरी" शब्द पर अंकित रक्त वर्षीय बिंदी माँ भारती के उन्नत ललाट पर सौभाग्य की प्रतीक कुमकुम बिंदी के मानिन्द आलौकित है जो इस आवरण को अत्यन्त उदात्त एवं दिव्य बना देती है। इसी प्रकार पुस्तक के पृष्ठीय भाग पर मुद्रित परिच्छेद इतना उत्कृष्ट है कि मानो डॉ. त्रिपाठी के साहित्याकाश का

समग्र अलौकिक पुञ्ज इस परिच्छेद में समाहित हो गया है।

स्वरूप :-

संदर्भित उपन्यास हस्तगत होते ही, पढ़ने की उत्कंठा हुई, एक ही क्रम में समग्र उपन्यास आद्योपान्त पढ़ डाला। कथा प्रवेश, कथांतर और कथामुख में प्रवेश करते हुए सीधे सीधे वैशंपायन कथा के बाद अन्तराल मिला, तदुपरान्त चन्द्रापीड की कथा, महाश्वेता की कथा, कादम्बरी कथा आदि के उपरान्त कथा निर्वहण से सामना हुआ ।

वास्तव में प्रस्तुत उपन्यास डॉ. राधा बल्लभ त्रिपाठी जी के साहित्यिक अनुभव एवं पराकाष्ठा की छांदसिक अभिव्यक्ति है। यह कृति एक उपन्यास होने के बावजूद काव्य के स्वांगोपांग मानको पर खरी उतरती है इसमें सभी रस, छन्द, अलंकार बिंब विधान यत्र तत्र सर्वत्र अपने नैसर्गिक रूप में विद्यमान है। भाषा का सहज प्रभाव अपने पूर्ण प्रवाह एवं सातत्य रूप से प्रवाहमान है।

भाषा :-

आलोच्य उपन्यास कांदबरी की भाषा अत्यन्त सहज, सरल, वैयाकरणिक, उदात्त, प्रसंगानुकूल एवं पात्रानुकूल है।भाषा का सहज प्रभाव अपने पूर्ण प्रवाह एवं सातत्य रूप से प्रवाहमान है। जहाँ भाषा के मानकीकरण में डॉ. त्रिपाठी सिद्धहस्त है वहीं संस्कृत के मानक तत्सम शब्दो का बाहुल्य है, पात्रतानुकूल एवं प्रसंगानुकूल परिस्थितिजन्य अमानक शब्द भी उच्चारित हुए है, और यही इस कृति की सबसे बड़ी विशेषता है कि रसानुभूत पाठक उपन्यास को पढ़ते-पढ़ते उसी परिदृश्य से आत्मसात हो जाता है और इस प्रकार पाठक को प्रसंग की परोक्षानुभूति होती है जो अद्वितीय और वर्णनातीत है ।

कथा प्रवेश का प्रथम परिच्छेद ही इतना सजीव बन पड़ा है कि सहृदय को ऐसा प्रतीत होता है कि वह चाण्डालों की बस्ती "पक्कण" में स्वयं वहां का साक्षी है। बानगी देखे "व्याघ्र देव की हवेली, "पक्कण" चाण्डालों की बस्ती के बीचों बीच थी। उसके आसपास फूस की छाजन वाले कच्चे घर थे, जिनके ओटलों पर मैदुर श्याम वर्ण वाले नंगे चाण्डाल बालक धमा-चोकड़ी मचाते रहते, कुछ किशोर मार-पीट करते, लड़ते-झगड़ते या गाते-बजाते भी देखे जा सकते 1"

इस प्रकार यह तथ्य सूरज की किरण की तरह सीधा और रोशनी की तरह साफ है कि "कादंबरी" डॉ. त्रिपाठी की अप्रतिम कृति है जो साहित्यिक मानदण्डो की कसौटी पर 24 कैरेट खरी उतरती है। चूँकि कांदबरी" संस्कृत ग्रन्थ का हिन्दी रूपान्तरण है। अतः नैसर्गिक रूप से संस्कृत शब्दों का बाहुल्य परिलक्षित हुआ है, परन्तु कहीं-कहीं जटिल वैयाकरणिक शब्द प्रवाह में अवरोध सिद्ध होते है यथा सृग्धि (सहभोज), बुभुक्षा (भूख), कुस्बुंबरी (धनिया), कृमिकीटनिवहसंकुल

(कीटाणुयुक्त), पर्यंकिका(आसन), आदि। वहीं दूसरी और आपने पात्रानुकूल देशज एवं लाग-लपेट रहित अमानक शब्दो का प्रयोग किया है।

यथा "तोते बामन का अवतार होते है ।"

"क्रोध मत दिलाना मुझको, ऐसा सबक सिखाऊँगी कि सारी पण्डिताई और वेद-शास्तर का सब ज्ञान धरा रह जायेगा।" तेरा यह केंटुआ मसक दूँगी। सब खतम।"

कादंबरी एक गद्य काव्य :-

डॉ. त्रिपाठी के लेखन की श्रेष्टता का ही परिणाम है कि यह कृति उपन्यास होते हुए भी काव्यात्मक स्वरुप में दिखाई देती है । आचार्य विश्वनाथ की उक्ति **"वाक्यम् रसात्मकम् काव्य"** के आधार पर आलोच्य कृति निश्चित रूप से काव्य की परिधी में समाहित की जा सकती है। इस कृति का प्रत्येक शब्द, पद एवं वाक्य विलक्षण है, रस युक्त है। शोध कृति का सिंहावलोकन करने पर स्पष्टतः दृष्टिगोचर होता है कि इस कृति में संयोग श्रृंगार दृष्टव्य है वहीं दूसरी ओर नायिका की घनीभूत पीड़ा विप्रलम्भ श्रृंगार के रूप में परिलक्षित हुई है यह पीड़ा चाहे पत्रलेखा की हो, महाश्वेता की या फिर कादम्बरी की, इस पीड़ा में एक आलौकिक आनन्द की रसानुभूति छिपी हुई है।

इसी प्रकर समग्र उपन्यास में मानवीकरण अलंकार, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिश्योक्ति, चित्रालंकार आदि स्थान-स्थान पर प्रयुक्त हुए है जो इस कृति को वैशिष्ट्य प्रदान करते है।

इस उपन्यास में जहाँ प्रकृति का सजीव चित्रण अपने चरमोत्कर्ष पर है वही सौन्दर्य एवं श्रृंगार की अद्भुत कलानिधी आलौकित हुई है। श्रृंगार देखे "वैशम्पयान पण्डित दाडिम की रक्ताभआकृति पर मुग्ध हो उठे थे। बोले "पूर्णिमा की रक्ताभ आभा में इस माधवी कुञ्ज की सघन छाया में हुई यह पीड़ा चाहे पत्र लेखा की हो, महाश्वेता की या फिर कादम्बरी की, इस पीड़ा में एक आलौकिक आनन्द की रसानुभूति छिपी हुई है।"

इस उपन्यास में जहाँ प्रकृति का सजीव चित्रण अपने चरमोत्कर्ष पर है वही सौन्दर्य एवं श्रृंगार की अद्भुत कलानिधी आलौकित हुई है। श्रृंगार देखे वैशम्पयान पण्डित दाडिम की रक्ताभआकृति पर मुग्ध हो उठे थे। बोले "पूर्णिमा की रक्ताभ आभा में इस माधवी कुञ्ज की सघन छाया में तुम्हारे किसलय से करतल में यह दाडिम फल ऐसा लगता है जैसे क्षीर सागर के अमृतमय फेनपुंज से उठता लक्ष्मी का उरोज ।"

इसी प्रकार प्रकृति चित्रण में तो लगता है श्री त्रिपाठी ने समस्त कीर्तिमान ध्वस्त कर प्रतिमान स्थापित किया है। "ग्रीष्म का समय प्रखर संताप फैलाता हुआ प्रकर्ष पर था। मल्लिका की चटकति कलियों में अट्टाहास कर रहे थे महाकाल। उमस भर्भूदल की तरह अन्तःकरण और बाहय करणो से लिपट रही थी उससे अधिक असह्य थी विकट

प्रतीक्षा की उमस ।" इसी प्रकार आगे लेखक ने वर्षा का जो वर्णन किया वह तो अप्रतिम है "वर्षा आई, सारा वन रोमांचित हो उठा। ताप से दरकती धरती पर पहली बौछार पड़ी तो धरती ने गर्म सांसे छोड़ी कदंब की शाखाएँ कंटकित हुई, फिर कोरकित होकर फूलों से लद गई। टटके कुटज के फूलों से पट गया सारा अरण्य। कई दिनों तक मूसलाधार वर्षा ने रूकने का नाम ही नहीं लिया। पंक में धंसता सा पक्कण दुर्गंध का द्वीप बनता जा रहा था। उद्यान में खिलती मल्लिकाओं, रजनी गंधाओं की सुगन्ध भी शूकरो, महिष-महिषियों और सारमेयों के मल की भभकती दुर्गन्ध को न दबा पाती ।"

इस प्रकार जहाँ श्री त्रिपाठी ने एक और प्रकृति का अनुपम दृश्य प्रस्तुत किया है वहीं दूसरी ओर विभिन्न रसो का अद्‌भुत काव्यपरक प्रयोग परिलक्षित हुआ है, श्रृंगार में तो लेखक अत्यन्त सिद्धहस्त है यह आलौकिक/ मर्यादित श्रृंगार अत्यन्त उदात्त एवं नैसर्गिक है।

आलोचनात्मक टीप :

प्रस्तुत आलोच्य पुस्तक वैसे तो अपने आप में पूर्ण है, परन्तु कहीं न कहीं कुछ ऐसे बिन्दु है जो उल्लेखनीय है:-

कहीं-कहीं कथानक इतना उलझा और जटिल है कि पाठक भ्रमित हो जाता है, परन्तु कथ्य की जटिलता रूपी पथवीहड़ता से शीघ्र ही रसानुभूत पाठक क्लांति रहित भी हो जाता है।

आलोच्य पुस्तक में वर्णित पात्र भड़भूंजे की लड़की का अन्त तक कोई अता पता नहीं लग पाया, पाठक कथा के अंत तक उधेड़बुन में रहता है कि आखिर वह लड़की कौन है? अंत तक उसके सम्बंध में प्रमाणिक जानकारी प्राप्त नहीं होती है।

इसी प्रकार शुक शावक के चार जन्मों (क्रमशः पुण्डरीक, चंद्रापीड़, वैशम्पायन और शुक शावक) के उपरान्त भी महाश्वेता का चिरयौवन तथा पुण्डरीक की प्रतीक्षा आश्चर्यजनक है।

कहीं कहीं भाषा जटिल हो गई है जो निश्चित रूप से मानस पटल पर अतिरिक्त दबाव आरोपित करती है। इस कथा के माध्यम से लेखक ने राजदरबार में व्याप्त षडयंत्र और रनिवास में व्याप्त शोषण को पाठको के समक्ष प्रकट किया है।

निष्कर्ष :

पुस्तक कादंबरी देश के ख्यातिलब्ध साहित्यकार एवं प्रकाण्ड विद्वान डॉ. राधा बल्लभ त्रिपाठी की अप्रतिम कृति है डॉ. त्रिपाठी के साहित्यिक चिंतन पर शोधपरक अध्ययन वास्तव में डॉ. त्रिपाठी के साहित्यिक ज्ञान की तुलना में मेरा एक छोटा सा प्रयास है।

वस्तुतः यह शोध कादंबरी या डॉ. त्रिपाठी के साहित्यिक चिंतन का आकलन नहीं वरन् मेरे द्वारा लिखित शोध का समीक्षात्मक आकलन है एवं इस बात का भी परीक्षण है कि मेरा यह

प्रयास शोध कार्य के निर्धारित मानदण्डों पर खरा उतरता है या नहीं ?

अन्ततः डॉ. त्रिपाठी का कथन "इस रूपान्तर में जो कुछ दिव्य, अपार्थिव, रम्य और मधुर है वह बाणभट्ट का और जो नश्वर, लौकिक एवं कलुष है वह इस रूपान्तरकार का ।" यह कथन आपकी सहजता, सरलता एवं वैचारिक उदात्तता का परिचायक है।

इस तरह यह कृति अपने आप में पूर्ण तथा अद्वितीय है।

अनिल सोनी "डॉवर"
(शोधार्थी)
सेम ग्लोबल यूनिवर्सिटी, रायसेन म.प्र.